जाओ
और
परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो

परमेश्वर के राज्य

का स्वरूप

द्वारा

डोटा

नियमावली 10

समूह के अगुवों के लिए

(चौथा संशोधित संस्करण 2016)

प्रस्तावना

राज्य का सुसमाचार क्या है?

राज्य का सुसमाचार, परमेश्वर के राज्य की खुशखबरी है। सामान्य तौर पर यदि देखें तो परमेश्वर के राज्य का अर्थ अनन्तता से अनन्तता तक हर एक सजीव और निर्जीव वस्तु पर परमेश्वर की प्रभुता या अधिकार है (भजन 24:1; 145:13)। खास तौर पर कहें तो, परमेश्वर का राज्य, यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की प्रभुता या अधिकार है (मत्ती 28:18)। यह राज्य मसीह के उद्धार के सम्पूर्ण कार्यों (प्रेरितों 2:36) और पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों के जीवन में उन कार्यों के प्रयोग पर आधरित होता है (रोमियों 14:17)। इस राज्य को विश्वासियों द्वारा मन में स्वीकार किया जाता (लूका 17:20-21) और उनके जीवन में इस्तेमाल किया जाता है। परमेश्वर का राज्य हमारे जीवन में चार प्रत्यक्ष क्षेत्रों में प्रगट हुआ हैः प्रारम्भ से लेकर अन्त तक विश्वासियों के सम्पूर्ण उद्धार में (मरकुस 10:25-26), एक कलीसिया के रूप में इस धरती पर पाये जाने वाले विश्वासियों के संविधान में (मत्ती 16:18-19), विश्वासियों के भले कामों (प्रभाव) के द्वारा मानवीय समाज के हर क्षेत्रा में (मत्ती 25:34-40), और अन्त में यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर मुक्त जगत या नये स्वर्ग और नयी धरती पर (1कुरिन्थियों 15:24-26)।

राज्य का सुसमाचार कब प्रचार किया गया?

उसके प्रथम आगमन पर, यीशु मसीह ने राज्य का सुसमाचार प्रचार किया (मरकुस 1:14-15; मत्ती 4:23)। यीशु ने करीब पचास दृष्टान्त कहे और वे सभी प्रभु के राज्य से सम्बन्धित थे। इन दृष्टान्तों में, यीशु हमें उनकी विशेषताओं के बारे में बताते हैं और खास तौर पर यह कि परमेश्वर के राज्य की रीतियों के अनुसार हम कैसे उसके राज्य में प्रवेश कर सकते हैं और उसमें किस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए। अन्त में, यीशु ने कहा, "राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा" (मत्ती 24:14)। इस तरह से, धेरती पर मसीही कलीसिया की स्थापना करने के बाद, मसीही लोग राज्य का सुसमाचार प्रचार करते हैं (प्रेरितों 8:12; 19:8; 20:24-25; 28:23,31)। सारे मसीहियों का लक्ष्य यीशु मसीह की प्रभुता का प्रचार करना, प्रचार की हुई शिक्षाओं का अभ्यास करना (मत्ती 23:3) और उनके तौर तरीकों को परमेश्वर के राज्य के तौर तरीकों से बदल देना है।

तैयार अगुवों और मज़दूरों को बढ़ाना

यीशु के अनुसार परमेश्वर के राज्य में "समय की मांग" तैयार अगुवे व मज़दूरों की संख्या है। एक तरफः "इसलिए खेत के स्वामी से *विनती करो* कि वह अपने खेत काटने के लिए मज़दूर भेज दे" (मत्ती 9:38)। और दूसरी तरफे "ज्यादा से ज्यादा मसीहियों को *तैयार करो* ताकि वे मसीह की कलीसिया में सेवक बन सकें" (मत्ती 4:19; मत्ती 10:7; इपिफसियों 4:12)। उन्हें शिष्यता के समूह के अगुवे रूप में, घरेलू कलीसिया के अगुवे, कलीसिया के प्राचीन के रूप में, दूतों (नयी कलीसिया के रोपणकर्ता के रूप में) ठहरा दें।

डोटा पाठ्यक्रम समूह के अगुवों को निम्नलिखित घटक उपलब्ध कराने के द्वारा मसीह की कलीसिया को व्यवहारिक बनाता हैः

1. प्रत्येक मैनुएल में 12 अध्याय दिये गये हैं जिन्हें 3 महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति सप्ताह) या छः महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति 14 दिनों में) माप्त किया जा सकता है। गहन अध्ययन कार्यक्रम में पाठ्यक्रम को छः दिनों में भी समाप्त किया जा सकता है।
2. महत्वपूर्ण बाइबल के पद विद्यार्थी की मसीह, उसकी कलीसिया और बाइबल को जानने में मदद करते हैं।
3. गहरे शब्दों में लिखे निर्देश जैसे "पढें" "खोजें व चर्चा करें" समूह के अगुवें को अगुवाई करने में सहायता प्रदान करते हैं।
4. "नोट्स" प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का सारांश बताते हैं। यह समूह अगुवे के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में काम करता है।
5. यह पाठ्यक्रम हमें मण्डली का निर्माण करने के लिए व्यवहारिक तरीके व अकेले या छोटे समूह के साथ यूहन्ना की पुस्तक का अध्ययन करने में सहायता करता है।
6. हर एक अध्याय में घर पर तैयारी करने का काम होता है, जिसे अध्याय के अन्त में विद्यार्थियों को दिया जा सकता है।
7. प्रशिक्षण पाठेयक्रम दूसरों को देने के लिए सहज है। प्रत्येक पाठ्यक्रम के 12 अध्यायों को पूरा करने के बाद, जो विद्याथी किसी समूह में दूसरे लोगों को यह शिक्षा देना चाहते हैं वे समूह के अगुवे के लिए एक प्रति या कॉपी प्राप्त कर सकते हैं।

हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर आपके क्षेत्रा में तेजी से मण्डलियों की ;घरेलू कलीसियाद्ध संख्या को बढ़ाये और ज्यादा से ज्यादा लोग परमेश्वर पर विश्वास करने में आज्ञाकारी बन जाएं;प्रेरितों 6ः7द्ध। यीशु ने कहा,फ्मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा और अधेलोक के पफाटक उसमें प्रबल नहीं होगें!य;मत्ती 16ः18द्ध! परमेश्वर को महिमा मिले! फ्क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानयुग होती रहेः आमीन!य;रोमियों 11ः36द्ध

डोटा (इस नाम की उत्पत्ति 05–10–1993 में हुआ जब यह पाठ्यक्रम पहली विशेष तौर पर रेडियो में प्रसारित किया गया, "Discipleship training On The Air", अर्थात चीन पर रोडियो पर प्रसारण व प्रशिक्षण)**1996** में (प्रथम संस्करण)। **2016** में (चौथा संशोधित संस्करण)।

सर्वाधिकार
मसीह की कलीसिया बनाने पर समूह के अगुवों के लिए तैयार किये गये 4 मैनुएल के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए निःशुल्क नकल किया जा सकता है। लेकिन उन्हें बेचा नहीं जा सकता। उन्हें बिना लिखित अनुमति के दूसरी भाषा में अुनवाद नहीं किया जा सकता।

सिफारिश
इस सामग्री को बहुतायत से इस्तेमाल करने और एक आशीष बनने के लिए तैयार किया गया है। लेकिन मसीह की कलीसिया बनाने के 4 मैनुएल का उददेश्य समूह के अगुवों या मसीहियों को तैयार करना है इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि केवल समूह के अगुवे ही मैनुएल 4 की नकल या कॉपी करें। एक विद्यार्थी को ठीक मूल पाठ्यक्रम की नकल केवल तभी दी जाये जब उनसे सभी 12 अध्यायों की शिक्षा प्राप्त कर ली हो और वह किसी समूह या किसी व्यक्ति को शिक्षा देने की कामना करता हो।

विषय सूची

समूह के अगुवों के लिए नियमावली 9

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना

परिचय व सर्वाधिकार

प्रशिक्षण कार्यक्रम 1

3 माह के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम। सप्ताह में डेढ़ से लेकर 2 घण्टे के लिए। समूह ज्यादा से ज़्यादा 8 लोगों तक का ही हो।

प्रत्येक कार्यक्रम प्रार्थना के साथ शुरू होकध्यर गृहकार्य देते हुए प्रार्थना के साथ ही समाप्त होता है।

अध्याय 13 *शान्त समय को साझा करना* (1राजा 3,11,17,18)
स्मरण करना (1. परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना : 1 पतरस 2:5)
शिक्षा देना *(परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना:* **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से संबंधित शर्तों के बारे में दृष्टान्त**)
विवाह का भोज (मत्ती 22:1-14)

अध्याय 14 *शान्त समय को साझा करना* (2राजाओं 5,6,17,25)
स्मरण करना (2. कलीसिया में पाई जाने वाली गतिविधियां : प्रेरितों 2:42)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री*/ रोमियों 4:1-17)

अध्याय 15 *शान्त समय को साझा करना* (2इतिहास 16,18,20,26) स्मरण करना
स्मरण करना (3. कलीसिया की सेवाकाईयां: इफिसियों :4:12-13)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना* : (**परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की जिम्मेदारी से संबंधित दृष्टान्त)**
दो पुत्र (मत्ती 21:28-32)**+ फलरहित अंजीर का वृक्ष** (लूका 5:11-32)

अध्याय 16 *शान्त समय को साझा करना* (2इतिहास 32,33,34,36)
स्मरण करना (4. कलीसिया के अगुवों का लक्ष्य : प्रेरितों 20:28)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री*/ रोमियों 4:17ब-25)

अध्याय 17 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 1,2,5,8)
स्मरण करना (5. कलीसिया में महिमा : इफिसियों 3:20-21)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना* : **परमेश्वर के राज्य में खोए हुओं के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के विषय में है** (लूका 15:1-7) + **खोया हुआ पुत्र** (लूका 15:11-32)

अध्याय 18 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 10,11,14,15)
स्मरण करना (श्रृंखला 'ञ' "मसीही कलीसिया" का पुनरावलोकन)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री*/ रोमियों 5:1-11)

अध्याय 19 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 16,18,19,22)
स्मरण करना (6. रोमियों 4:5)

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवनः* **परमेश्वर के राज्य में प्रगट होने वाले प्रेम का दृष्टान्त) भला सामरी** (लूका 10:29-37)

अध्याय 20 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 23,24,25,27)
स्मरण करना (7. रोमियों 5:1-2अ)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 5:12-21)

अध्याय 21 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 31,32,33,34)
स्मरण करना (8. रोमियों 5:3-4)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन* : **परमेश्वर के राज्य में नम्रता से संबंधित दृष्टान्त हैं)**
भोज में आरक्षित स्थान (लूका 14:7-14) + **फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत** (लूका 18:9-14)

अध्याय 22 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 37,38,40,49)
स्मरण करना (9.रोमियों 6:13)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 6:1-11)

अध्याय 23 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 50,51,58,62)
स्मरण करना (10. रोमियों 6:23)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवनः* **परमेश्वर के राज्य में क्षमा से संबंधित दृष्टान्त**)
निर्दयी सेवक (मत्ती 18:23-35)

अध्याय 24 शान्त समय को साझा करना (भजन संहिता 71,73,78,82)
स्मरण करना (रोमियों के 5 प्रमुख पदों का पुनरावलोकन करें)
बाइबल का अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 6:12-23)

परिशिष्ट 4 *परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **सकेत फाटक** (मत्ती 7:13-14) + **बड़े भोज का दृष्टान्त** (लूका 14:15-24)

परिशिष्ट 5 *परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **बाजार में बैठे हुए बालकों का दृष्टांत** (मत्ती 11:16-19; लूका 7:31-35) **+ मौसम के चिन्ह् का दृष्टांत** (मत्ती 16:1-4; लूका 12:54-56)**+ जाल का दृष्टांत** (मत्ती 13:47-50)

परिशिष्ट 6 *परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **खोई हुई भेड़ का दृष्टांत** (लूका 15:1-7) + **खोए हुए सिक्के का दृष्टांत** (लूका 15:8-10)

परिशिष्ट 7 *परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **दुष्टात्मा के वापस आने का दृष्टान्त** (मत्ती 12:43-45; लूका 11:24-26) **+ दो देनदारों का दृष्टांत** (लूका 7:40-50)

परिशिष्ट 8 *परमेश्वर के राज्य में जीवन।* मुद्दई (मत्ती 5:25-26)

वचन याद करने का तरीकाः समूह के अगुवों के लिए नियमावली 9 के परिशिष्ट1 में देखिये। शान्त समय बिताने, बाइबल अध्ययन करने, मनन करने व वचनों को याद करने के लिए (नियमावली 1 परिशिष्टों में देखें)

प्रशिक्षण कार्यक्रम 2

गहन कार्यक्रम का इस्तेमाल सप्ताह में एक बार पूरे दिन या 6 दिन के गहन प्रशिक्षण सेमीनार के दौरान किया जा सकता है। पूरे समूह को प्रशिक्षित समूह अगुवे के साथ छोटे समूहों में बांट दें। समूह को 3–10 लोगों के बीच ही सीमित रखें।

सुझावित कार्यक्रम

09.00–09.30	आराधना (बड़े समूह के साथ)
09.30–11.00	शिक्षा (बड़े समूह के साथ)
	अन्तराल
11.30–13.00	बाइबल अध्ययन(छोटे समूह के साथ)
	अन्तराल
16.00–17.00	शिक्षा या बाइबल अध्ययन को पूरा करने, प्रश्नों के जवाब देने, या अतिरिक्त शिक्षा के लिए (बड़े समूह के साथ)
	अन्तराल
17.30–17:45	मनन(बड़े समूह के साथ) व वचन याद करना (दो दो के समूह में)
17:45–18:30	बाइबल पठन (अकेले)
18:30–19.00	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करना (दो दो के समूह में)
19.00–19:45	बांटना (बड़े समूह के साथ) और प्रार्थना करना (छोटे समूह के साथ)

दिन 1 (अध्याय 13+14)

प्रार्थना

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से संबंधित दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 4:1–17अ)

स्मरण करना (1पतरस 2:5+ प्रेरितों 2+42)

बाइबल पठन (1राजा 3,11,17,18; 2राजा 5,6,17,25)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो–दो के जोड़े में: 1राजा 18)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 2 (अध्याय 15+16)

प्रार्थना

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की जिम्मेदारी से संबंधित दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों 4:1–17अ)

स्मरण करना (इफिसियों 4:12–13+प्रेरितों 20:28)

बाइबल पठन (2इतिहास 16,18,29,26,32,33,34,36)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो–दो के जोड़े में:2 इतिहास 20)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 3 (अध्याय 17+18)

प्रार्थना

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **परमेश्वर के राज्य में खोए हुओं के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के विषय में दृष्टान्त**)

बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 5:11)

स्मरण करना (इफिसियों 3:20–21श्रृंखला ञ का पुनरावलोकन)

बाइबल पठन (भजन संहिता 1,2,5,8,10,11,14,15)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो दो के जोड़े में: भजन संहिता 2)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 4 (अध्याय 19+20)

प्रार्थना

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **परमेश्वर के राज्य में प्रगट प्रेम से संबंधित दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 5:12–21)

स्मरण करना (रोमियों 4:5+ रोमियों 5:1–2अ)

बाइबल पठन (भजन संहिता 16,18,19,2223,24,25,27)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो–दो के जोड़े में: भजन संहिता 18)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 5 (अध्याय 21+22)

प्रार्थना

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **परमेश्वर के राज्य में प्रगट नम्रता से संबंधित दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 6:1–11)

स्मरण करना (रोमियों 5:3–4+ रोमियों 6:13)

बाइबल पठन (भजन संहिता 31,32,33,34,37,38,40,49)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो–दो के जोड़े में: भजन संहिता 18)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 6 (अध्याय 23+24)

प्रार्थना

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **परमेश्वर के राज्य में क्षमा से संबंधित दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 6:12–23)

स्मरण करना (रोमियों 6:23+ पुनरावलोकन)

बाइबल पठन (भजन संहिता 50,51,58,62,71,73,78,82)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो–दो के जोड़े में: भजन संहिता 51)

बांटना और प्रार्थना करना

सम्भावित अतिरिक्त शिक्षाएं

परिशिष्ट 4 *परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **सकरा फाटक** (मत्ती 7:13-14)+ **बड़े भोज का दृष्टान्त** (लूका 14:15-24)

परिशिष्ट 5 *परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **बाजार में बैठे हुए बालकों का दृष्टांत** (मत्ती 11:16-19; लूका 7:31-35) **+ मौसम के चिन्ह् का दृष्टांत** (मत्ती 16:1-4; लूका 12:54-56) **+ जाल का दृष्टांत** (मत्ती 13:47-50)

परिशिष्ट 6 *परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **खोई हुई भेड़ का दृष्टांत** (लूका 15:1-7) **+ खोए हुए सिक्के का दृष्टांत** (लूका 15:8-10)

परिशिष्ट 7 *परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **दुष्टात्मा के वापस आने का दृष्टान्त** (मत्ती 12:43-45; लूका 11:24-26) **+ दो देनदारों का दृष्टांत** (लूका 7:40-50)

परिशिष्ट 8 *परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **मुद्दई** (मत्ती 5:25-26)